संपादक

डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
www.vishwabharati.in

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

Arts Science & Commerce College Naldurg

320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

SEARCH ARENA

ISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 | Issue 11 | Feb 2018

समकालीन हिंदी पद्य साहित्य विवेचन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक

डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

दुष्यंतकुमार की गजलों में सर्वत्र राजनीतिक बोध दृष्टिगोचर होता है । वे समाज की बदतर स्थिति के लिए देश की समसामयिक गलत राजनीति को जिम्मेदार ठहराते हैं । राजनीतिज्ञ जब अपने कर्तव्यों से मुँह–मोड लेते हैं तब देश की पूरी व्यवस्था डाँवाडोल हो जाती हैं । कथित राजनेता अलग–अलग तरिकों से जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते है चुनकर आने पर जनता का संबंधही भूल जाते हैं । वे भेली जनता का अपने स्वार्थ हेतु उपयोग कराके लेते हैं । इन सभी बातों का दुष्यंत जी ने सूक्ष्मता से अवलोकन किया था । वे सामान्य जनता को सचेत कराने हेतु तीक्ष्ण कलम अर्थात् गजल का उपयोग करते हैं ।

Science & Commerce College Naldurg

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 237-245
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

समकालीन विविध विमर्श

डॉ. सुभाष राठोड

समकालीन साहित्य वह है जो अपने युग एवं परिवेशसे संपृक्त होता है।भारतीय जन मानस के साहित्य में मानविय मन की आषा, निराशा, आकांक्षा, अपेक्षा, राग विराग, हर्ष, विषाद आदि युगिन स्थिति, समकालीन साहित्य में समाया हुआ है। आज साठोत्तरी साहित्य या स्वतंत्रता के बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों में अस्थिरता,समस्यागत परिस्थितियों का पर्दाफाष हुआ है।आजभी २१वा सदि में आ जनता कई तरह की समस्याओ का सामना कर रही है।वर्तमान समय में राजनैतिक अवस्था का तथा आर्थिक परिस्थिति का रूप डांवा डोल हो रहा है। समकालीन भारतीय साहित्य का स्वरूप असंतोश, अस्विकृति और विद्रोह का स्वर स्पश्ट रूपसे उभरा है। प्रषासन के क्षेत्र में हर जगह साहित्य के क्षेत्र में असंतोश आक्रोष, अविस्वास, असफल, मातृप्रेम, बेरोजगारी की हताश मानषिकता तथा वैष्विकरण के कारण मंडराते आर्थिक खतरों के काले बादल किसानों की चिंता भ्रश्ट प्रषासनका क्षेत्र,षिक्षाव्यवस्था में उदाषिनता,समकालीन भारतीय साहित्य में उभरता हुआ नजर आता है।साथ ही आज का समकालीन भारमीय साहित्य विसंगतियों से भरा है।रोजमर्रा की जींदगी में आम आदमी हाषिए पर फेंका गया है। समकालीन षब्द हमे काल ओर देष दोनो से जोडता है।वौ तो साहित्य के क्षेत्र में समकालीन का अर्थ है,नया संदर्भो के साथ नये नये भावबोध से जूडना।कविता क्षेत्र से संबंधित केवि

डॉ. सुभाष राठोड : क.वि. वा महाविद्यालय,नळदूर्ग जि. उस्मानाबाद.

Arts Science & Commerce College Naldurg

लीलाधर जगुडी समकालीनता को लेकर कहते है कि,''कविता अपने समय की समझसे पैदा होती है और हर काल की कविता अपनी समझ,अपना सौंदर्य और अपना बोध स्वय रचती है। अर्थात समकालीन कविता का क्षेत्र व्यापक है।वर्तमान प्रासंगिकता को लेकर चलती हैं।''१ समकालीन समय में काव्य के नये सौंदर्य ,नयी संवेदना को वाणी दी है।समकालीन साहित्यकार यर्थाथ को बहूत नजदीकता से देखता, परखता और दूर की सोंचता है। समकालीन जन जीवन की त्रासदी को हम देख रहे है कि,महानगरों में आम आदमी का जीवन व्यस्ततापूर्ण मषीनगत चल रहा है। पारीवारिक या अन्य संबधों में उश्मा की स्थिति नश्ट हो रही है।इन्सानों की जानवरों की तरह बद्तमीजी का व्यावहार, अजनबीपन और लापरवाही की स्थिती उभर रही है। समकालीनता पर जब हम विचार करतें है तब सब से पहले विचार आता है,देष की रक्षा व्यवस्था और आतंकवाद का।आतंकवाद जैसे विष्व को नश्ट करने का सपना देख रहा है।

भारत जैसे कृषिप्रधान देश में आज किसानों की आत्महत्या का षिलषिला चल रहा है। दयनिय स्थिति के कारण किसानों ने जीवन यात्रा को पूर्णरिम देना पसंत कर रहे है।आज का समय भूमंडलीकरण, बाजारीकरण या मूक्त अर्थव्यवस्था का।आज चारो ओर उद्योगपतियों,पूजिपतियों कारखानदारों का समय है।इस देष की कितनी बडी विडबना हैकि, हमारे देष में उद्योगपतियों की एकसत्ता या धनपतियों की संख्या बढ रही है ता हजारों की संख्यां में किसानों की आत्महत्या हो रही है। मध्यमवर्ग मॅहगाईयों में दबी जा रहा है।यह समय किसानों या मध्यमवर्गके लिए भयावह यानी क्रुरता का माना जाता है। कवि निलेष रघुवंषी की कविता अंतिम पंक्ति में समकालिन व्यापकता विविध समस्याओं को गहराई से देखा है।उन्होने भारतीय किसानों की दूर्दशा को वाणी देते हॅए स्पश्ट रूपसे कहते है कि, ''ये हमारे समय के किसान है/न कि किसान का यह समय है।''२ इस वाक्य में किसानों की जीवंत तस्वीर उजागर करते है।

आज हमारे नेता बता रहे है कि ,'आज भारत की आर्थिक स्थिती समृद्ध है ऐसा बडे पैमाने पर बता रहे है। क्या उस विकासदर में उन हजारों किसानों की आतमहत्या का दर सामील है। गरिब, भिखमंगे,किसान बेरोजगारी से तृस्त यूवा कर्ज और बेकारी से आत्म्हत्या पर उतर आए हैफिर भी हम गर्व से कह रहे है कि,भारत का विकास और विष्व में एक बडी षक्ति के साथ उभर रहा है।'

समकालीन समय में गरीब,किसान, बेकार यूवा, नारी आदि की स्थिति सोंचनिय हो रही है।

आदिवाशी स्त्री विमर्ष– ''ग्लोबलाइजेशन'' के इस दौर में अपने आस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए छटपटा रही है। आदिवासी जन समुदायों का एक ऐसा विमर्ष सामने आया है, जिसमें उनकी पहचान जल,जंगल,जमीन आदी मुख्य कारण है। इसी के परिणामस्वरूप उनके वाचिक परम्परामें प्राप्त हाषिए का साहित्य में प्रतिरोध का स्वर है जो लोक की भावना से प्रेरित है। आज भी विकास के नाम पर विस्थापन का दंष झेल रहे आदिवासीयों में मुक्ति की आकांक्षा, समाज और संस्कृती में अपनी पहचान बनाने की ललक सर्वाधिक है। आदिवासी कवितामें स्त्री अस्मिता के अनेक रूपोंमें अपने होने का बोध कराती रहती है। एक स्त्री अपनी पहचान के लिए किस तरह छटपटाती है। इस का सुंदर उदाहरण आदिवासी कविताओंमें स्पश्ट हूआ है। चाहे निर्मला पूलल हो ग्रेस क्रुजर, चंद्रकांत देवताले, मंजू जोत्सना, सरिता बडड्रूक हो,किसी न किसी रूपसे नारी संवेदनाके विविध समकालीन पक्ष को उजागर किया है। आदिवासी साहित्यमें अन्य विधाओं की अपेक्षा 'कविता' यह विधा आदिवासी साहित्य की दृश्टिसे महत्वपूर्ण रही है। अनेक समकालीन कवियोंने आदिवासी कविताओं के माध्यम से अपने समाज की स्थिती, दषा, सामाजिक पक्ष, राजनितीक अत्याचार के साथ–साथ आम आदमी तथा नारियों की आत्मा की चीख, तथा जंगलों में गुजरती पहाडी जिंदगी मदतके लिए विरहनुभूति की पूकार तथा पहाडो, जंगलोंमें बजतें नगाडों की आवाज जिससे पहाडी जिंदगी हिलने लगती है। भारतीय परम्परा के अनूसार आदिवासीयों ने नारी को माता–भूमाता जैसे विषेशणोंसे उसकी पूजा करते है, परंतू बदलते परिवेष की बदलती जिंदगी के कारण पुरूशों में नारी के प्रति व्यवहार घटियॉ होता जा रहा है। आज वैष्विक बुध्दिवादी युगमें भी नारियों की स्थिति हर बार अन्याय अत्याचार जैसे घिलौने रूपोंसे अमानूशिक बनता जा रहा है। इतना ही नहीं नारियों को भगवान भरोसे छोड कर षारिरीक, मानसिक, सामाजिक अत्याचार करते नजर आ रहे है।

समकालीन आदिवासी कविता में स्त्री का अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए आदिवासी जन समुदाय के लिए जल, जमीन, जंगल और स्वाभीमान महत्वपूर्ण रहा है। आदीवासी कवियित्री निर्मला पूतूल 'तूम कहॉ हो माया' में नारी संवेदना तथा वर्तमानमें विस्थापित लोगों की मानसिकता तथा आम नारी की छटपटाहट को

व्यक्त करती है।

''दिल्ली के किस कोने में हो तूम?

मयूर विहार, पंजाबी बाग या षाहदरामें?

कनाट प्लेस की किसी दूकान में

सेक्सगर्ल हो या हर्बल कंपनी में पॅकट?

कहॉ हो तूम माया? कहॉ हो?

कही हों भी सही सलामत या।''३

अमानूशिक बर्ताव, व्यवहार तथा पागल कुत्तों की तरह नोंचने वालों की ऑखोंसे बचना मुष्किल हो जाता है। आदिवासी महिला जगह-जगह पर संघर्श करती है।वर्तमान में स्वयं को बचाने के लिए हाथियार उठाकर आगे बढती नजर आती है। कवित्री निर्मला पूतूल 'नगाडे की तरह बजते षब्द' कविता में नारी अस्मिता की बात उठाती हूई लिखती है कि,

''आज की तारिख के साथ

की गिरेगी जितनी बुंदे लहू की पृथ्वी पर।

उतनी ही जन्मेंगी निर्मला पूतूल,

हवा में मुठ्ठी बंधे हाथ लहराते हूए।'' ४ (नगाडे की तरह बजते षब्द)

अर्थात आदिवासी स्त्री अपने आस्तित्व का 'नगाडा' बजाया है, जिसकी गुंज अनसूनी नहीं किया जा सकता। अर्थात आदिवासीयों की वेदना पीडा, दर्द, टीस, उपेक्षा, अपमान, घुटन टुटन, विवषता, विपन्नता कों तथा नारी अस्मिता को तलाषती हुअी, आदिवासियों मे जन जागृती कर रही हैं। निर्मला पूतूल परम्परागत पूरूशि व्यवस्था तथा पारिवारिक संघर्श या मर्दवादी षक्ति को चेतावनी देकर नारी की हीनता को नश्ट कर अपना अधिकार दिलाना चाहती है। आदिवासी ही नहीं अन्य जनजातियों की नारियॉ पुरूश प्रधान व्यवस्था से पल-पल पर प्रताडीत है। इसलिए उनका विरोध करने हेतू तथा अपने अस्तित्व का घर तलाषने की बात उनकी कविता ''अपने घर की तलाषमें'' लिखती है।

''धरती के इस छोर से उस छोर तक/मुठ्ठी भर सवाल लिए मै

दौडती-हॉकती भागती/ तलाष रही हुँ, सदियों से निरंतर

Arts Science & Commerce College Naldurg

अपनी जमीन, अपना घर/ अपने होने का अर्थ।''५

स्त्रीयॉ केवल परिवार पालने की मषीन नहीं वह पूरूशों की बराबरी का गाडी का पुर्जा है। अपनी सार्थकता सिध्द करती हूअी पूरूशों के साथ अपना जीवन, दूख:, दर्द, पीडा त्रासदी को झेलती हूअी आगे बढ रही है। घर की तलाष नहीं चाहती पूरा घर ही चाहती है पूरे वह अधिकार के साथ। हम देखते है कि, आज वैष्विकरण के माहौल में भारतीय समाज व्यवस्था में लडकियॉ, या नारियॉ दहेज जैसी प्रथासे आज भी षोशित, पीडीत, अत्याचारित हो रही है। षराबी पति या परिवार से प्रताडीत हो रही हैं। जिसका वर्णन निर्मला पूतूल पूरूशी व्यवस्था को विरोध करती हूअी स्त्री को केवल चूल्हा और बिस्तर समझनेवालों कों तमाचा मारा है। जैसे की-

तन के भूगोल से परे/एक स्त्री के

मन की गॉठे खोल कर/कभी पढा है तूमने

उसके भीतर का खौलता इतिहास?/अगर नहीं/

तो फिर जानते क्या हो तूम

रसोई और बिस्तर के गणित से परे एक स्त्रीके बारेमें ६

(नगाडे की तरह बजते शब्द)

कृशि विमर्ष -स्वाधीनता संग्राम में किसानों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही थी। राजनीती तथा स्वतंत्रता संग्राम में किसानों की भूमिका संघर्श पूर्ण थी। किसानों का संघर्श साहूकार, जमीनदारों, कारखानदारों, मील मालिको का था। परंतु आज किसान प्रषासन तथा राजनीतीक विचारों परेषान नजर आ रहा है। प्रेमचंद, नंददुलारे वाजपेयी, बंगला के षरचंद्र, रविन्द्रनाथ, जैसे विद्वान किसानों से संबधित विचार व्यक्त करते थे। प्रेमचंद की तरह बाबा नागार्जुन किसानों के हमदर्दी तथा वकालत करनेवाले चिंतनषील प्रगतिवादी विचारधारा के कवि रहे है। उन्होंने किसानों को केंद्र में रखकर अनेक कविताऍ लिखी ।जिसमें वर्तमान प्रासंगिकता को बखूबी से वाणी दी है। बाबा नागाजूर्न का जन्म तरऊनी गांव में किसानी परिवार में हुआ था। पिताजी किसान होने के कारण खेती में आया जाया करते थे।किसानी परिवार से होने के कारण कृशकों की, श्रमिवर्ग, मजदूर का दु:ख दर्द तथा षोशित और षोशक वर्ग को सहज रूप से देखा है। इस संदर्भ में नरेंद्रसिंह लिखते है कि,''नागार्जुन जानते है कि

Arts, Science & Commerce College Naldurg

वास्तव में इस दुनियां में दो दुनियां है, एक गरीबों की एक अमीरों की, एक षोशितों की एक षोशकों की, बहुत मामूलीसी लगने वाली बात आज भी सबसे महत्वपूर्ण बात है। सामाजिक, आर्थिक विशमता को जितने जबर्दस्त और सीधे ढंगसे नागार्जुन ने प्रस्तूत किया उतने जबर्दस्त और सीधे ढंगसे किसीने नहीं।''७ इस संग्रह की कविताएँ आम आदमी संवेदना तथा कृशक वर्ग की वेदना, पीडित षोशित की वर्ग ध्वनि सहज रूपसे उभर कर पाठक वर्ग तक पहूँचती गयी। युगधारा की कविताओं में 'रवि ठाकूर, स्वदेष षासक, खाली नहीं और खाली', जैसी अनेकों कविताएँ किसानों की अभावग्रस्त स्थिति को व्यक्त करते है। कवि स्वयं कृशक वर्ग से संबंधित होने के कारण जीवन के अनेक अभावों दु:ख दर्दो को झेला, अनुभव किया ।साधारण लोगों के बीच रहकर अभावग्रस्त जीवन जीया जिसका वर्णन रवि ठाकूर कविता में व्यक्त करता है।

''पैदा हुआ था मैं,

दीन– हीन अपठित किसी कृशक कुल में,

आ रहा हूँ पीता आभाव का आसव ठेठ बचपनसे....,

मेरा क्षुद्र व्यक्तित्व रूध्द है सीमीत है ,

आटा, दाल, नमक लकडी के जुगाड में।''८

अर्थात यह कविता उनके जीवन का वास्तविक रूप उद्घाटित करती है ।कृशक जीवन का भोगा हुआ यथार्थ, अभावग्रस्त जीवन की वेदना, भूख की पीडा, व्यस्त हुई है। भारतीय किसानों, मजदूरों तथा पीडीत सर्वहारा की भूख की पीडा षोशित जनता की वेदना उनकी कविता में उभरी है। अर्थात नागार्जुन का भोगा हुआ यथार्थ कविता में'साक्ष' बनकर आता है। आज भी आजादी के सत्तर साल बाद भी भारतीय किसान भूख से पीडित परिवार पालने में असमर्थ है ।अतिवृश्टि अनावृश्टि के कारण बेहाल है। किसानों के अनाज को बाजार में किंमत नहीं तथाखूले आम होनेवाली साहूकारों की लूट स्पश्ट हो रही है। फर्क इतना है कि, पहले महाजनी सभ्यता में सेठ साहुकार, जमीनदार किसान मजदूरों की लूट करते थे तो आज बॅक, सरकार या ऑफिसर परिवर्तन के नाम पर भ्रश्टाचार कर लूट कर रहे है। किसान तब भी मर रहा था आज भी मर रहा है। विकसनषील देष में किसान आत्महत्या पर उतर आये है।स्वतंत्रता के बाद हमारे देष में जनता तथा किसानों के हित में अनेक कानून या परियोजनाएँ चलायी गयी, लेकिन सारी योजनाएँ सीर्फ

सफेद कागज पर काले अक्षर बनी रही। आज भी योजनाएं फाईलों में बंद नींद ले रही है। कुंभकर्ण सी सरकार उसे नींद से बाहर नहीं जगाना चाहती। इसलिए कृशक एवं श्रमिक वर्ग की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रही है।

नारी विमर्ष– शहरी या देहाती नारी की वास्ततिक संवेदना तथा पूरूशी वासना का षिकार न हो वह भाव या पर पूरूशों की हवस न हो जाए इसलिए दरवाजा बंद कर जागरूक बन तो जाती है परंतु कही डर पैदा हो जाता है वास्तविकता का। क्योकिं पुरूशी षोशण से बचने की कोषीश करती है। नारी षोशण आज हर क्षेत्र में हो रहा है। साथ ही 'ओढनीं' कविता के नारी संवेदना उभरी है। अनामिका वर्तमान षहरी जीवन में जीती नारी के प्रति लिखती है–

''अपने वजूद की माटी से/धोती थी रोज इसे दुल्हन,

और गोदी में बिछा कर सुखाती थी/सोचती सी यह चूपचाप,

तार–तार इस ओढनी से/क्या वह कभी पोंछ पाएगी,

खुंखार चेहरों का खूंखरिता/और मैल दिलों का।''९

आज की नारियाँ चाहे कितनी भी पढी लिखी हो, वेतन पाती हो उसका जीवन 'ओढणी' की तार–तार है। पारिवारिक दबाव तथा अधिक वेतन के आकर्शण में उसका जीवन अनेक वर्जओं सें घिरा है। परिवार व्यवस्था का विघटन हूआ। आज की नारी भले ही आर्थिक संपन्नता में जी रही है।पर पारिवारकिता से हताष, निराष जरूर है। आज कुछ नारियॉ नारी मुक्ति आंदोलन पर उतर आती है, परंतु यह करना ठीक होगा कि,''नारीवादी आंदोलन ने नारी समाज में कुछ हद्द तक जागृति एवं आत्मसंम्मान का भाव भर दिया है इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। षिक्षित नारीने सब कुछ स्वीकार नहीं किया।उस पर हो रहे अन्याय का विरोध हुआ उसके प्रतिवाद का स्वर उभरा। परंतु जब यह नारी बनाम पुरूश के संघर्श में सामिल हो जाए तो नारीवादी आंदोलन के सामने कई प्रष्न खडे हो सकते है।''१०

नारी लेखिका में रमणिका गुप्ता,अनामिका,सुमनराजे,प्रभाखेतान, निर्मला पुतुल जैसी विदूशि नारियों ने अपनी कविताओं में नारियों के विविध पहलूओं पर प्रष्न उठाती है।प्रभा खेतान ने 'कविता मेरी जरूरत है' एक रिलीफ, मेरे व्यक्तित्व की एक अभिवक्ती में नारी के अधूरे पन की जिंदगी को, वर्तमान त्रासदी को उकेरा है। जैसे–

''सारी सारी षाम/ सुखते कपडों सी बरामदे है,

प्रतिक्षा करू तुम्हारे आने की/ एक क्षण से/ दूसरे क्षण तक।''११

कात्यायनी नारी अधिकारों का सवाल उपस्थित करती हुअी समकालीन नारी समस्यापर अभिव्यक्ति देती हैं उनकी कविता नारी षोशण की पीडा को तथा पुरूशी सांमतवादी विचारधारा पर प्रहार करती नजर आती है। जैसे–

''स्त्री हूँ, अज्ञान के अंधकार में भटकने को पैदा हुई,

यह जीवन में ही उम्र का एक बडा हिस्सा खत्म हो गया,

पषु नहीं थी, फिर भी, या बन नहीं पाई,

जो अपरिचित रह जाती ज्ञान से....

तब जाना कि उडकर इस पृथ्वी से दूर जा सकते है.....

सिर्फ महान कवि

कोई आदमी नहीं/स्त्री कतई नहीं।''१२

यहॉ अनामिका की तरह नारी षोशण तथा उसकी अजानता उसके नारी होने पर सवाल उठाती है।नारी की दुनियां केवल षोशण तथा अत्याचार की रही है। चाहे परंपरागत रही हो या वर्तमा, हमेषा स्वंय के लिए संघर्श करती रहती है। सुमन राजे नारी की अत्याचारी जिंदगी पर संघर्शत्माक लिखती है। उनकी 'युध्द' नामक कविता में नारी संवेदना को व्यक्त करती है–

''मै चीख उठती थी/फिर कांपकर/दोन्हो हाथों से,

थाम लेती/अपना उदर।''१३

यहॉ कात्यायनी हो या सुमन राजे नारी की समाज में होनेवाली उपेक्षात्मकता को व्यक्त करती हैं।नारी का परिवार, धर्म,राजनिती, हर जगह होनेवाले षोशण तथा अत्याचार को सह रही है।पुरूश यह नहीं जानता कि, आज वर्तमान भूमंडलीकरण के दौरमें नारी पूरूशों के साथ ज्ञानार्जन, धनार्जन कर रही है ।घर–परिवार चलाने में पिछे नहीं हटती है। पुरूशी अंहकार को तमाचा मारती है। आज खूद्द कमाती है, खूद सोचती है और दूसरी नारियों को उनके अधिकार से अवगत करती क्रांतिवाली बात सामने आ रही है।

Arts Science & Commerce College Naldurg

संदर्भः

१. समकालीन भारतीय साहित्य अंक २००९ पृ १५

२. समकालीन साहित्य

३. नगाडे की तरह बजते शब्द निर्मला पुतूल ६४

४. नगाडे की तरह बजते शब्द निर्मला पुतूल ६४

५. तंजराम शर्मा की कविताए

६. आदिवासी कविता में विद्रोह

७. युगधारा नागार्जून ९३

८. ओढणी–कविता ––रमणिका गुप्ता पृ ९

९. आधूनिक कविता युगिन संदर्भ अरूण मेहता ९९

१०. एक रिलीफ कात्यायनी

११. यूद्ध अनामिका

१२. मेहरूनिसा परवेज की कविता

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602